6 15 AM

...44.8KB/s 57

× Online_State_le...
f6mail.rediff.com

राजकीय महिला महाविद्यालय, रतिया

राज्य-स्तरीय
हिन्दी काव्य एवं निबन्ध प्रतियोगिता

आयोजक : निराला हिन्दी साहित्य परिषद, हिन्दी विभाग

निबन्ध :

1. लॉकडाउन में किताबें
2. लॉकडाउन में जिन्दगी
3. लॉकडाउन में मोबाईल की भूमिका
4. लॉकडाउन में स्त्री की भूमिका
5. वर्तमान संकट और मजदूरों की दशा

कविता :

1. कोरोना में जिन्दगी
2. स्त्री
3. कॉलेज
4. मनुष्य और प्रकृति
5. मजदूर

नियम व शर्तें

1. प्रत्येक महाविद्यालय दोनों विधाओं में एक-एक प्रविष्ट्या भेजें।
2. सभी प्रविष्टियाँ दिनांक 22 मई 2020 सायं 5.00 बजे तक आमंत्रित है और परिणाम 26 मई को घोषित किये जायेंगे।
3. केवल हिन्दी भाषा में हस्तलिखित टंकणशुदा अपेक्षित है।
4. काव्य, निबंध मौलिक एवं तर्कसंगत होना चाहिये।
5. काव्य कम से कम 15 पंक्ति और अधिक से अधिक 40 पंक्तियों में होनी चाहिये।
6. निबन्ध की शब्द सीमा 500 से 750 के मध्य होनी चाहिए।
7. विजेता प्रतिभागियों को ई-प्रमाण पत्र ऑनलाईन ही भेजे जायेंगे।
8. प्रविष्टियाँ ई-मेल द्वारा ss07363@gmail.com पर या वहाट्स एप्प 94662-62609 नंबर पर [illegible]
9. अपनी प्रविष्टियों पर छात्र का नाम, कक्षा, अनुक्रमांक, महाविद्यालय का नाम एवं सपंर्क सूत्र लिखना अनिवार्य है।
10. सर्वश्रेष्ठ निबंध, काव्य को महाविद्यालय-पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।
11. अधिक जानकारी के लिए मो. 94662-62609 व 98960-21934 पर सम्पर्क करें।

प्राचार्य: | संयोजक-प्रभारी | सह-संयोजक

22-5-2020

To, राजकीय महाविद्यालय रतिया

Green House
Date
Page No.

कोविड -19

जिंदगी हो गई है निराश
कुछ भी नहीं बचा है खास
ने जाने कब होगी कोरोना
दवाई की तलाश
पता नहीं कब मिलेगी
खुलकर जीने की आश ....
कुदरत को हमने इस कदर
किया है नाराज
कि हमें घर से भी निकलने की
अनुमति नहीं है आज
हे ईश! कब सुनोगे
हमारी आवाज ....
लोग पहले कट, मर जाते थे
एक - दूसरे की बचाने के लिए लाज
लेकिन कोरोना की वजह से कोई
भी तैयार नहीं उठाने को लाश ....
कोरोना का फैल रहा है कहर
कोई भी नहीं निकल रहा है बाहर
गल्ली मोहल्ले और गाँव बंद हो रहे
सभी शहर
परंतु नाज है हमें उन डॉक्टरों पर
जिन्होंने अब तक मानी नहीं हार ....

ये मेरी स्वयं रचित है। Komal

नाम - कोमल
कक्षा - बी० ए० तृतीया वर्ष
अनुक्रमांक - 1531420031
दयानंद महिला महाविद्यालय

[मजदूर]

पसीने से तर-तर,
घर से निकला दोपहर।
जा रहा है -- रोजगार के लिए
उसका क्या कसूर है? इसमे
क्योंकि वो बस एक मजदूर है।
बस यहीं उसका कसूर है,
लेकिन वह मजबूर है॥
भूखा-प्यासा रात-दिन,
जेब-खाली पैसों के बिन।
वो करता जा रहा है काम।
एक पल का भी न ले रहा आराम।
परिश्रम करने की लगन के साथ मन उसका भरपूर है
क्योंकि वह एक मजदूर है।
बस यहीं उसका कसूर है।
लेकिन वह मजबूर है॥

Scanned with CamScanner

बच्चों को है पालता,
परिवार को है संभालता,
हर बला को है टालता,
लेकिन फिर भी दुखभरा है उसका रास्ता
कड़ी मेहनत करने पर भी वह मजबूर है,
क्योंकि वह एक मजदूर है,
बस यही उसका कसूर है
लेकिन वह ये सब करने पर मजबूर है।।
मजबूती से वो खड़ा है,
मुसीबतों से वो बड़ा है,
चुनौतियों से वो लड़ा है,
कभी भी नहीं वो डरा है,
बस सिर्फ उसका इतना ही कसूर है
क्या वो एक मजबूर है,
लेकिन वह मजबूर है।

नाम-संध्या
कक्षा-बी०ए० (तृतीया)
अनुक्रमांक-1531420134

लॉकडाउन मे जिन्दगी

* प्रस्तावना :-

लॉकडाउन अर्थात तालाबंदी । इसके तहत सभी को अपने-अपने घरों में रहने की सलाह दी गई है। सरकार के द्वारा जिसका कड़ाई से पालन भी करवाया जा रहा है। यह इसलिए जरुरी है क्योंकि कोरोना वायरस नामक महामारी मानव जाति के इतिहास में पहली बार आई है। अब पूरा देश इस भयंकर वायरस से लडने के लिए अपने-अपने घरों में कैद हो गया है। इस महामारी के प्रकोप से लाखों लोग अपनी जान गंवा चुके है। इस जानलेवा बीमारी से बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है जोकि सोशल डिस्टेंसिग है यानि कि सामाजिक दूरी।

यह संक्रमण एक से दूसरे इंसान तक बहुत तेजी से फैलता है। जिसके कारण भारत सरकार ने लॉकडाउन को ही इससे बचने के लिए आवश्यक कहा है। अर्थात- लॉकडाउन एक आपातकालीन व्यवस्था है जो किसी आपदा या महामारी के वक्त लागू की जाती है। जिस इलाके में लॉकडाउन किया गया है, उस क्षेत्र के लोगों को घरों से बाहर निकलने की अनुमति नही होती है उन्हें सिर्फ दवा और खाने-पीने जैसी जरुरी चीजों की खरीदारी के लिए ही बाहर आने की इजाजत मिलती है। लॉकडाउन के वक्त कोई भी व्यक्ति अनावश्यक कार्य के लिए सड़कों पर नहीं निकल सकता।

* पारिवारिक संबंधों में मजबूती :-

लॉकडाउन से पहले के समय की बात करें तो उस वक्त हम सभी अपने रोजमर्रा के कामों में इतना व्यस्त रहते थे कि अपनों के लिए, अपने परिवार के लिए व बच्चों के लिए कभी समय नहीं निकाल पाते थे।

Scanned with CamScanner

लेकिन लॉकडाउन से यह सारी शिकायतें खत्म हो गई हैं। इस दौरान अपने परिवार के साथ बिताने के लिए लोगों को बेहतरीन पल मिले हैं। कई प्यारी-प्यारी यादें इस दौरान लोग सहेज रहे हैं, अपने घर के बुजुर्गों के साथ समय बिता रहे हैं। इसके साथ-साथ रिश्तों में आई कड़वाहट को मिटा रहे हैं।

* मन की दबी इच्छाओं को पूरा करने का समय :

लॉकडाउन के समय लोग अपने शौक को भी पूरा कर रहे हैं क्योंकि उनको इसके लिए अपनी खुद की दबी इच्छाओं को पूरा करने का समय मिला है। जो लोग नृत्य सीखने के शौकीन थे और समय के अभाव के कारण नृत्य कला को खुद से दूर कर रहे थे, आज वे अपने इस हुनर को निखार रहे हैं। वहीं जो लोग खाना बनाने के शौकीन हैं, वो इंटरनेट के माध्यम से खाना बनाना सीख रहे हैं। पुराने सीरियलों का दौर वापस आ गया है जिसका मजा लोग अपने पूरे परिवार के साथ बैठकर ले रहे हैं और अपनी पुरानी यादों को वापस से जी रहे हैं। बच्चों के साथ कैरम, लूडो जैसे खेलों का बड़ों ने आनंद लिया। विद्यालयों में छुट्टी के कारण घर बैठकर शिक्षकों ने ऑनलाइन क्लासेज का सहारा लिया ताकि विद्यार्थियों की शिक्षा में कोई रुकावट न आए।

* **प्रदूषण में कमी :-** लॉकडाउन के दौरान प्रदूषण में कमी हुई है। अगर लॉकडाउन से पहले की बात करें तो उस समय कारखानों से निकलने वाला कचरा जल में प्रवाहित कर दिया जाता था, गाड़ियों के रास्तों पर दौड़ने से ध्वनि और वायु प्रदूषण हो रहे थे लेकिन लॉकडाउन की वजह से इन सभी चीज़ों में कमी आई है और आज चिड़ियों की चहचहाहट हमारे आंगन में वापस से सुनाई दे रही है, जो कहीं खो-सी गई थी।

Scanned with CamScanner

नदियों का जल स्वच्छता की ओर अग्रसर हो रहा है। हर प्रकार के प्रदूषण में गिरावट आई है जोकि प्रकृति की दृष्टि से लाभदायक है।

* मजदूरों की जिंदगी पर बुरा प्रभाव :-

लॉकडाउन का सबसे बुरा असर मजदूरों की ज़िंदगी पर हुआ है जो रोजमर्रा के काम से अपने घर वालों का पेट पालते थे। आज उनके लिए एक वक्त की रोटी भी बहुत मुश्किल हो गई है। कई मजदूर पैदल ही अपने घरों की ओर पलायन कर रहे हैं। अगर लॉकडाउन का सबसे ज्यादा नुकसान किसी को हुआ है तो वह है-मजदूर जो अपने परिवार का पेट पालने के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं।

* उपसंहार :-

कोरोना वायरस के प्रकोप को रोकने के लिए व इस संक्रमण से मुक्ति के लिए भारत के प्रधानमंत्री ने लॉकडाउन की घोषणा की थी क्योंकि सामाजिक दूरी ही कोरोना को रोकने के लिए कारगर उपाय है। यही कारण है कि लॉकडाउन को बढ़ाया जा रहा है। इसलिए हम सभी की जिम्मेदारी है कि इस निर्णय का पूर्ण समर्थन करते हुए हम लॉकडाउन का पालन करें। सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों का पूरी ईमानदारी के साथ पालन करना ही हमारा कर्तव्य है, तभी इस महामारी को खत्म किया जा सकता है।

नाम - स्मृति Phone - 8708723148
कक्षा - बी.ए. (final yr) Vocational.
अनुक्रमांक - 1815520039
महाविद्यालय - दयानंद महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र